नवीं झलक

इंग्लैण्ड मार्ग से भारत प्रस्थान

अफ्रीका में बैरिस्टर गांधी की सार्वजनिक कार्यों के कारण काफी प्रसिद्धि हो गई थी। देश–विदेश की शिक्षित जनता उनके नाम से परिचित ही नहीं हो गई थी, उनके प्रति आदर भी रखने लगी थी ।

गांधी जी अपनी पत्नी और जर्मन मित्र मिस्टर केलेन बेक के साथ इंग्लैंड के लिए जहाज से रवाना हो गए। उनके पास यद्यपि तीसरे दर्जे का टिकट था फिर भी जहाज के कप्तान ने उन्हें विशेष सुविधाएँ दे रखीं थीं। उन्हें ताजे फल और मेवे दिए जाते थे, जो आम तौर से तीसरे दर्जे के यात्री को नहीं दिए जाते। डर्बन से इंग्लैंड की सत्रह–अठारह दिन की यात्रा थी। इस यात्रा का एक रोचक प्रसंग दो मित्रों का वाक् युद्ध है ।

केलेन बेक को दूरबीन का बड़ा शौक था। एक दिन वे कीमती दूरबीन लेकर सुदूर का दृश्य देखने का सुख ले रहे थे । गांधी जी अपने मित्र से कहने लगे, ''देखो केलेन बेक, जिस आदर्श को हम लोग अपनाए हुए हैं, कीमती दूरबीनों का रखना उनके अनुरूप नहीं है।'' केलेन बेक गांधी जी की बात को समझते तो थे पर वे दूरबीन का मोह छोड़ नहीं पा रहे थे। एक बार जब दोनों मित्र केबिन के पास खड़े थे, तब उनमें फिर से बहस छिड़ गई। गांधी जी बोले–''यह दूरबीन ही मित्र, हम दोनों के बीच झगड़े की जड़ है। बेहतर हो कि आप इसे फेंक दें।''

''जरूर फेंक देना चाहिए,'' कहकर

केलेन बेक ने गांधी जी के हाथों में दूरबीन पकड़ा दी। गांधी जी ने दूरबीन समुद्र में उछाल दी। वह उछलती–कूदती लहरों में विलीन हो गई। दोनों मित्रों का विवाद भी उसी में विलीन हो गया।

जिस समय गांधी जी इंग्लैंड पहुँचे, उस समय यूरोप में युद्ध छिड़ा हुआ था, इंग्लैंड में वे मुख्यतः गोखले से मिलने आए थे। परन्तु उस समय वे इंग्लैंड में नहीं, पेरिस में थे। गांधी जी ने इंग्लैंड में रहने वाले भारतीयों की एक सभा बुलाई और उनसे युद्ध में अँग्रेजों का साथ देने के लिए आग्रह किया। कुछ वक्ता गांधी जी की इस सलाह से सहमत नहीं थे। वे शत्रु की

विपत्ति से लाभ उठाकर अपने देश को स्वतंत्र कराना चाहते थे। गांधी जी को यह दलील पसंद नहीं थी। वे आपत्ति के समय अँग्रेजों से सौदेबाजी करना उचित नहीं समझते थे। अतः युद्धकाल तक उन्होंने अपनी माँगों को स्थगित रखने का निश्चय किया।

जिस प्रकार गांधी जी ने अफ्रीका में बोअर युद्ध में घायलों की सेवा–सुश्रूषा के लिए स्वयंसेवकों की टोली बनाई थी, वैसी ही यहाँ भी भारतीय स्वयंसेवकों की टोली ''इंडियन एम्बुलेंस कॉप्स'' तैयार की। ब्रिटिश सरकार ने उनकी सेवा को साभार स्वीकार किया।

इंग्लैंड में गांधी जी पसली के दर्द से बीमार हो गए। उनकी बीमारी केलेन बेक की चिंता का विषय बन गई। गांधी जी उस समय मूँगफली, कच्चे और पके केले, नीबू, जैतून का तेल, टमाटर, अंगूर आदि का सेवन कर रहे थे। दूध, अनाज बिल्कुल नहीं लेते थे। डॉक्टरों ने उनसे अनाज लेने का बहुत आग्रह किया। उनके गुरु गोखले जी ने भी डॉक्टरों की सलाह का समर्थन किया और उनसे बार–बार अन्न ग्रहण करने को कहा। गांधी जी दुविधा में पड़ गए; गुरु की आज्ञा मानूँ या अंतरात्मा की। उन्होंने अंतरात्मा की बात मानी और अन्न ग्रहण नहीं किया। फलाहार से धीरे–धीरे उनका स्वास्थ सुधरने लगा और वे स्वदेश की ओर रवाना हो गए। मिस्टर केलेन बेक भी गांधी जी के साथ भारत आने वाले थे, परन्तु जर्मन होने के नाते भारत सरकार ने उन पर रोक लगा दी, क्योंकि महायुद्ध में जर्मन, ब्रिटेन का शत्रु था।

जहाज में तीसरा दर्जा न होने से गांधी जी ने दूसरे दर्जे में यात्रा की। यात्रा में फल और मेवे का सेवन किया। इससे उनके स्वास्थ में बहुत सुधार हो गया। डॉक्टर ने छाती पर जो पट्टी बाँध दी थी और उसे बँधे ही रखने की सलाह दी थी, वह उन्होंने दो दिन में ही निकाल फेंकी। डॉक्टरी चिकित्सा पर उनकी बिलकुल आस्था नहीं थी। उसके प्रति अनास्था का भाव आजीवन बना रहा।

अभ्यास

1. गांधी जी और केलेन बेक के बीच झगड़े की जड़ कौन–सी वस्तु थी और क्यों?
2. इंग्लैंड में गांधी जी ने भारतीयों से युद्ध में अँग्रेजों का साथ देने के लिए क्यों कहा?
3. भारत सरकार ने केलेन बेक को गांधी जी के साथ क्यों नहीं आने दिया ?
4. गांधी जी ने अपना इलाज कैसे किया ?